

## भारत की विदेश नीति: बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण

राजकिशोर

स्वतंत्र लेखक

### सारांश

भारत की विदेश नीति समय के साथ बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप निरंतर विकसित होती रही है। स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात भारत ने अपनी विदेश नीति को शांति, सह-अस्तित्व, गुटनिरपेक्षता तथा पंचशील के सिद्धांतों पर आधारित किया। प्रारंभिक काल में भारत ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में संतुलन बनाए रखने और राष्ट्रीय हितों की रक्षा करने के उद्देश्य से स्वतंत्र विदेश नीति अपनाई। शीत युद्ध की समाप्ति, वैश्वीकरण के विस्तार तथा नई वैश्विक शक्तियों के उदय ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति को परिवर्तित कर दिया है, जिसका प्रभाव भारत की विदेश नीति पर भी पड़ा है। वर्तमान समय में भारत की विदेश नीति अधिक व्यावहारिक, सक्रिय और बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। पड़ोसी प्रथम नीति, एक्ट ईस्ट पॉलिसी, इंडो-पैसिफिक रणनीति तथा विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों में सक्रिय भागीदारी इसके प्रमुख आयाम हैं। साथ ही चीन और पाकिस्तान के साथ संबंध, क्षेत्रीय सुरक्षा, आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा तथा वैश्विक शक्ति संतुलन जैसी चुनौतियाँ भी भारत की विदेश नीति को प्रभावित करती हैं। इस शोध का उद्देश्य बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ भारत अपनी कूटनीतिक रणनीतियों को किस प्रकार अनुकूलित कर रहा है। अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश नीति राष्ट्रीय हितों की रक्षा के साथ-साथ वैश्विक सहयोग, शांति और विकास को भी प्रोत्साहित करती है।

**मूल शब्द:** भारत की विदेश नीति, अंतरराष्ट्रीय संबंध, वैश्विक परिप्रेक्ष्य, गुटनिरपेक्षता, पंचशील, इंडो-पैसिफिक रणनीति, वैश्वीकरण, रणनीतिक साझेदारी।

### प्रस्तावना

भारत की विदेश नीति किसी भी राष्ट्र की तरह उसके राष्ट्रीय हितों, सुरक्षा, आर्थिक विकास और अंतरराष्ट्रीय प्रतिष्ठा को ध्यान में रखते हुए निर्धारित की जाती है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारत ने अपनी विदेश नीति को शांति, सह-अस्तित्व, सहयोग और वैश्विक संतुलन के सिद्धांतों पर आधारित किया। प्रारंभिक दौर में भारत की विदेश नीति पर पंडित जवाहरलाल नेहरू के विचारों का गहरा प्रभाव रहा, जिसके परिणामस्वरूप गुटनिरपेक्षता, पंचशील सिद्धांत तथा उपनिवेशवाद और साम्राज्यवाद के विरोध जैसे मूलभूत सिद्धांत विकसित हुए। समय के साथ वैश्विक राजनीति, अर्थव्यवस्था और शक्ति संतुलन में व्यापक परिवर्तन हुए हैं। शीत युद्ध की समाप्ति, वैश्वीकरण का विस्तार, नई उभरती शक्तियों का उदय तथा क्षेत्रीय और वैश्विक संगठनों की भूमिका में वृद्धि ने अंतरराष्ट्रीय संबंधों की प्रकृति को बदल दिया है। इन परिवर्तनों ने भारत की विदेश नीति को भी प्रभावित किया है, जिसके कारण भारत को अपनी कूटनीतिक रणनीतियों और प्राथमिकताओं में समय-समय पर परिवर्तन करना पड़ा है।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत एक उभरती हुई शक्ति के रूप में सामने आया है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उसकी भूमिका लगातार महत्वपूर्ण होती जा रही है। भारत की विदेश नीति अब केवल राजनीतिक या सुरक्षा संबंधी मुद्दों तक सीमित नहीं रह गई है, बल्कि इसमें आर्थिक कूटनीति, क्षेत्रीय सहयोग, ऊर्जा सुरक्षा, समुद्री सुरक्षा तथा वैश्विक शासन में सक्रिय भागीदारी जैसे आयाम भी शामिल हो गए हैं।

इस शोध का उद्देश्य बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति का विश्लेषण करना तथा यह समझना है कि अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के परिवर्तन के साथ भारत अपनी विदेश नीति को किस प्रकार अनुकूलित कर रहा है और भविष्य में इसके क्या संभावित आयाम हो सकते हैं।

### भारत की विदेश नीति का ऐतिहासिक विकास

भारत की विदेश नीति का विकास स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद से विभिन्न चरणों में हुआ है। 1947 में स्वतंत्रता के पश्चात भारत ने ऐसी विदेश नीति अपनाई जो शांति, सह-अस्तित्व और स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता पर आधारित थी। इस दौर में भारत के प्रथम प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू ने विदेश नीति के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। नेहरू ने अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन के बजाय नैतिक मूल्यों, सहयोग और शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व को प्राथमिकता दी। भारत की प्रारंभिक विदेश नीति का प्रमुख आधार गुटनिरपेक्ष आंदोलन (Non-Aligned Movement) था। शीत युद्ध के समय विश्व दो प्रमुख गुटों अमेरिका और सोवियत संघ में विभाजित था, किंतु भारत ने किसी भी गुट में शामिल होने के बजाय स्वतंत्र और संतुलित नीति अपनाई। इस नीति का उद्देश्य भारत की संप्रभुता और स्वतंत्र निर्णय क्षमता को बनाए रखना था।

इसी संदर्भ में पंचशील सिद्धांत भी भारत की विदेश नीति का महत्वपूर्ण आधार बने। पंचशील के पाँच सिद्धांत एक-दूसरे की क्षेत्रीय अखंडता और संप्रभुता का सम्मान, आक्रमण न करना, आंतरिक मामलों में हस्तक्षेप न करना, समानता और पारस्परिक लाभ, तथा शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व अंतरराष्ट्रीय संबंधों में भारत की नीति के मूल तत्व रहे। शीत युद्ध के बाद वैश्विक राजनीति में बड़े परिवर्तन हुए। 1991 के बाद भारत ने आर्थिक उदारीकरण की नीति अपनाई, जिसके परिणामस्वरूप उसकी विदेश नीति में आर्थिक और व्यापारिक हितों को भी प्रमुख स्थान मिला। इस काल में भारत ने विभिन्न देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी विकसित की और क्षेत्रीय तथा वैश्विक संगठनों में अपनी सक्रिय भूमिका को बढ़ाया।

### बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य की विशेषताएँ

वर्तमान समय में अंतरराष्ट्रीय राजनीति और वैश्विक व्यवस्था में व्यापक परिवर्तन देखने को मिल रहे हैं। शीत युद्ध की समाप्ति के बाद विश्व व्यवस्था में एकध्रुवीयता का उदय हुआ, जिसमें अमेरिका प्रमुख शक्ति के रूप में उभरा। किंतु समय के साथ चीन, भारत, रूस तथा अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के विकास के कारण विश्व धीरे-धीरे बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर बढ़ रहा है। इस परिवर्तन ने वैश्विक राजनीति और कूटनीतिक संबंधों की प्रकृति को प्रभावित किया है। वैश्वीकरण के विस्तार ने भी अंतरराष्ट्रीय संबंधों को नई दिशा दी है। व्यापार, निवेश, तकनीक और संचार के क्षेत्र में बढ़ते सहयोग के कारण देशों के बीच पारस्परिक निर्भरता बढ़ी है। इसके परिणामस्वरूप आर्थिक कूटनीति और व्यापारिक संबंध विदेश नीति का महत्वपूर्ण हिस्सा बन गए हैं। भारत सहित अनेक देशों ने आर्थिक विकास और वैश्विक प्रतिस्पर्धा को ध्यान में रखते हुए अपनी विदेश नीतियों में आर्थिक हितों को प्राथमिकता दी है।

इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय संगठनों और क्षेत्रीय समूहों की भूमिका भी बढ़ी है। संयुक्त राष्ट्र, विश्व व्यापार संगठन (WTO), ब्रिक्स (BRICS), जी-20 (G20) और क्वाड (QUAD) जैसे मंच वैश्विक समस्याओं के समाधान और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इन मंचों के माध्यम से देश अपने राजनीतिक, आर्थिक और रणनीतिक हितों को आगे बढ़ाने का प्रयास करते हैं।

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में सुरक्षा संबंधी चुनौतियाँ भी बदल रही हैं। आतंकवाद, साइबर सुरक्षा, जलवायु परिवर्तन, ऊर्जा संकट और समुद्री सुरक्षा जैसे मुद्दे अब वैश्विक चिंता के विषय बन गए हैं। इन चुनौतियों के समाधान के लिए देशों के बीच सहयोग और समन्वय की आवश्यकता बढ़ गई है।

## भारत की समकालीन विदेश नीति के प्रमुख आयाम

वर्तमान समय में भारत की विदेश नीति अधिक सक्रिय, व्यावहारिक और बहुआयामी स्वरूप ग्रहण कर चुकी है। बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत ने अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा, क्षेत्रीय स्थिरता तथा वैश्विक सहयोग को ध्यान में रखते हुए विभिन्न कूटनीतिक नीतियों और रणनीतियों को अपनाया है। इन नीतियों के माध्यम से भारत अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी भूमिका को सुदृढ़ बनाने का प्रयास कर रहा है। भारत की समकालीन विदेश नीति का एक महत्वपूर्ण आयाम “पड़ोसी प्रथम नीति” (Neighbourhood First Policy) है। इस नीति के अंतर्गत भारत अपने पड़ोसी देशों के साथ सहयोग, विश्वास और विकास आधारित संबंधों को मजबूत करने का प्रयास करता है। दक्षिण एशिया में शांति, स्थिरता और आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देना इस नीति का मुख्य उद्देश्य है।

इसके अतिरिक्त भारत ने “एक्ट ईस्ट पॉलिसी” (Act East Policy) को भी प्रमुखता दी है। इस नीति के माध्यम से भारत दक्षिण-पूर्व एशियाई देशों के साथ आर्थिक, सांस्कृतिक और रणनीतिक संबंधों को मजबूत कर रहा है। यह नीति भारत को एशिया-प्रशांत क्षेत्र में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने का अवसर प्रदान करती है। भारत की विदेश नीति में इंडो-पैसिफिक क्षेत्र का महत्व भी लगातार बढ़ रहा है। इस क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा, व्यापार मार्गों की सुरक्षा और क्षेत्रीय संतुलन बनाए रखने के लिए भारत विभिन्न देशों के साथ सहयोग बढ़ा रहा है। इसी संदर्भ में भारत की भागीदारी क्वाड (QUAD) जैसे समूहों में भी महत्वपूर्ण मानी जाती है।

इसके साथ ही भारत जी-20 (G20), ब्रिक्स (BRICS), संयुक्त राष्ट्र (UN) तथा अन्य अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इन मंचों के माध्यम से भारत वैश्विक आर्थिक सहयोग, जलवायु परिवर्तन, सतत विकास और अंतरराष्ट्रीय शांति जैसे मुद्दों पर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करता है।

## भारत की विदेश नीति की चुनौतियाँ

बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति के सामने अनेक चुनौतियाँ भी मौजूद हैं। अंतरराष्ट्रीय राजनीति में शक्ति संतुलन, क्षेत्रीय विवाद, आर्थिक प्रतिस्पर्धा तथा सुरक्षा संबंधी समस्याएँ भारत की कूटनीतिक रणनीतियों को प्रभावित करती हैं। इन चुनौतियों का प्रभाव भारत के पड़ोसी देशों के साथ संबंधों से लेकर वैश्विक मंचों पर उसकी भूमिका तक देखा जा सकता है। भारत की विदेश नीति की प्रमुख चुनौती चीन और पाकिस्तान के साथ संबंध हैं। चीन के साथ सीमा विवाद तथा हिंद-प्रशांत क्षेत्र में उसकी बढ़ती गतिविधियाँ भारत की सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण चिंता का विषय हैं। इसी प्रकार पाकिस्तान के साथ लंबे समय से चले आ रहे राजनीतिक तनाव और सीमा पार आतंकवाद ने दोनों देशों के संबंधों को जटिल बना दिया है।

दूसरी महत्वपूर्ण चुनौती क्षेत्रीय सुरक्षा और आतंकवाद से जुड़ी हुई है। दक्षिण एशिया और आसपास के क्षेत्रों में आतंकवादी गतिविधियाँ, उग्रवाद और अस्थिरता भारत की आंतरिक और बाहरी सुरक्षा को प्रभावित करती हैं। इन समस्याओं से निपटने के लिए भारत को अंतरराष्ट्रीय सहयोग और प्रभावी कूटनीति की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त वैश्विक शक्ति संतुलन में परिवर्तन भी भारत के लिए चुनौतीपूर्ण है। अमेरिका, चीन, रूस और यूरोपीय देशों के बीच बदलते संबंधों के कारण भारत को अपनी विदेश नीति में संतुलन बनाए रखना पड़ता है ताकि वह अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा कर सके।

आर्थिक और ऊर्जा सुरक्षा भी भारत की विदेश नीति के महत्वपूर्ण मुद्दों में से एक है। बढ़ती जनसंख्या और आर्थिक विकास की आवश्यकताओं के कारण भारत को ऊर्जा संसाधनों, व्यापारिक साझेदारियों और तकनीकी सहयोग की निरंतर आवश्यकता रहती है। इन आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए भारत को विभिन्न देशों के साथ संतुलित और मजबूत संबंध बनाए रखने पड़ते हैं।

## भारत की विदेश नीति की उपलब्धियाँ और संभावनाएँ

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में भारत की विदेश नीति ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धियाँ प्राप्त की हैं। बदलती अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप भारत ने अपनी कूटनीतिक रणनीतियों को सुदृढ़ किया है, जिसके परिणामस्वरूप वैश्विक मंचों पर उसकी भूमिका और प्रभाव लगातार बढ़ रहा है। भारत आज एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में स्थापित हो रहा है और विभिन्न अंतरराष्ट्रीय संगठनों तथा मंचों पर सक्रिय भागीदारी निभा रहा है। भारत की प्रमुख उपलब्धियों में से एक अंतरराष्ट्रीय संगठनों में उसकी बढ़ती भागीदारी है। जी-20 (G20), ब्रिक्स (BRICS), शंघाई सहयोग संगठन (SCO) तथा संयुक्त राष्ट्र जैसे मंचों पर भारत ने अपनी प्रभावशाली उपस्थिति दर्ज कराई है। विशेष रूप से जी-20 की अध्यक्षता के दौरान भारत ने वैश्विक आर्थिक सहयोग, सतत विकास और विकासशील देशों की आवाज को मजबूती से प्रस्तुत किया। इसके अतिरिक्त भारत ने विभिन्न देशों के साथ रणनीतिक साझेदारी (Strategic Partnerships) को भी मजबूत किया है। अमेरिका, रूस, फ्रांस, जापान और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ भारत के संबंधों में उल्लेखनीय प्रगति हुई है। इन साझेदारियों के माध्यम से भारत ने रक्षा, तकनीक, व्यापार और सुरक्षा के क्षेत्रों में सहयोग को बढ़ावा दिया है।

भारत की विदेश नीति की एक महत्वपूर्ण उपलब्धि आर्थिक कूटनीति और व्यापारिक विस्तार भी है। भारत ने विभिन्न देशों और क्षेत्रीय संगठनों के साथ व्यापारिक समझौते और निवेश संबंध स्थापित किए हैं, जिससे उसकी अर्थव्यवस्था को वैश्विक स्तर पर मजबूती मिली है। साथ ही, ऊर्जा सुरक्षा और तकनीकी सहयोग के क्षेत्र में भी भारत ने कई देशों के साथ महत्वपूर्ण समझौते किए हैं। भविष्य की दृष्टि से भारत की विदेश नीति में अनेक संभावनाएँ निहित हैं। भारत वैश्विक शासन में अधिक सक्रिय भूमिका निभाने, क्षेत्रीय सहयोग को मजबूत करने तथा आर्थिक और तकनीकी विकास के माध्यम से अंतरराष्ट्रीय मंचों पर अपनी स्थिति को और अधिक सुदृढ़ कर सकता है। यदि भारत संतुलित कूटनीति, रणनीतिक सहयोग और राष्ट्रीय हितों को ध्यान में रखते हुए अपनी विदेश नीति को आगे बढ़ाता है, तो वह भविष्य में वैश्विक राजनीति में एक प्रमुख और प्रभावशाली शक्ति के रूप में उभर सकता है।

### निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से स्पष्ट होता है कि भारत की विदेश नीति समय के साथ बदलती वैश्विक परिस्थितियों के अनुरूप निरंतर विकसित होती रही है। स्वतंत्रता के बाद भारत ने शांति, सह-अस्तित्व, गुटनिरपेक्षता और पंचशील जैसे सिद्धांतों के आधार पर अपनी विदेश नीति की नींव रखी। इन सिद्धांतों ने भारत को अंतरराष्ट्रीय राजनीति में एक स्वतंत्र और संतुलित पहचान प्रदान की। शीत युद्ध की समाप्ति और वैश्वीकरण के विस्तार के बाद अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में अनेक परिवर्तन हुए, जिनके प्रभाव से भारत की विदेश नीति में भी नए आयाम जुड़े। आर्थिक कूटनीति, क्षेत्रीय सहयोग, रणनीतिक साझेदारी तथा बहुपक्षीय मंचों में सक्रिय भागीदारी भारत की समकालीन विदेश नीति के महत्वपूर्ण तत्व बन गए हैं। वर्तमान समय में भारत एक उभरती हुई वैश्विक शक्ति के रूप में सामने आया है और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर उसकी भूमिका लगातार बढ़ रही है। हालांकि चीन के साथ सीमा विवाद, पाकिस्तान के साथ तनाव, आतंकवाद, ऊर्जा सुरक्षा तथा वैश्विक शक्ति संतुलन जैसी चुनौतियाँ अभी भी मौजूद हैं। इन चुनौतियों का समाधान प्रभावी कूटनीति, अंतरराष्ट्रीय सहयोग और संतुलित रणनीतिक दृष्टिकोण के माध्यम से ही संभव है।

अतः कहा जा सकता है कि बदलते वैश्विक परिप्रेक्ष्य में भारत की विदेश नीति केवल राष्ट्रीय हितों की सुरक्षा तक सीमित नहीं है, बल्कि यह वैश्विक शांति, सहयोग और सतत विकास को भी बढ़ावा देने का प्रयास करती है। भविष्य में भारत की विदेश नीति के सामने अनेक अवसर और संभावनाएँ हैं, जिनके माध्यम से वह विश्व राजनीति में अपनी भूमिका को और अधिक सुदृढ़ बना सकता है।

### संदर्भ सूची

1. अप्पादुरई, ए. (2007). भारत की विदेश नीति और अंतरराष्ट्रीय संबंध. नई दिल्ली: ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
2. दीक्षित, जे. एन. (2004). भारतीय विदेश नीति: 1947 से आगे. नई दिल्ली: पिकाडोर इंडिया।
3. राजन, एम. एस. (1994). गुटनिरपेक्षता और भारत की विदेश नीति. नई दिल्ली: कंसेट पब्लिशिंग कंपनी।
4. पंत, हर्ष वी. (2016). भारतीय विदेश नीति: उभरती वैश्विक भूमिका. नई दिल्ली: रूटलेज इंडिया।
5. सिंह, जसजीत (2011). भारत की सुरक्षा और विदेश नीति. नई दिल्ली: ज्ञान पब्लिशिंग हाउस।
6. मेनन, शिवशंकर (2016). विकल्प: भारत की विदेश नीति की दिशा. नई दिल्ली: पेंगुइन रैंडम हाउस इंडिया।
7. थरूर, शशि (2012). पैक्स इंडिका: भारत और 21वीं सदी की विश्व व्यवस्था. नई दिल्ली: पेंगुइन बुक्स।
8. शर्मा, उर्मिला (2018). भारत की विदेश नीति. जयपुर: राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
9. कुमार, सुरेंद्र (2015). अंतरराष्ट्रीय राजनीति और भारत की विदेश नीति. नई दिल्ली: प्रभात प्रकाशन।
10. जोशी, वी. सी. (2017). अंतरराष्ट्रीय संबंध. नई दिल्ली: मैकग्रॉ-हिल एजुकेशन।
11. भारत सरकार, विदेश मंत्रालय। (2023). भारत की विदेश नीति: वार्षिक रिपोर्ट. नई दिल्ली: विदेश मंत्रालय।
12. सिंह, रणबीर (2019). भारत और विश्व राजनीति. नई दिल्ली: एटलांटिक पब्लिशर्स।
13. संयुक्त राष्ट्र। (2022). विश्व राजनीति और वैश्विक शासन पर रिपोर्ट. न्यूयॉर्क: संयुक्त राष्ट्र प्रकाशन।
14. पांडेय, एस. के. (2020). समकालीन अंतरराष्ट्रीय संबंध और भारत. वाराणसी: विश्वविद्यालय प्रकाशन।